राहु ग्रह की पौराणिक कथा

हिरण्यकश्यपु की पुत्री का नाम सिंहिका था, जिसका विवाह विप्रचिति के साथ हुआ उनकी एक सन्तान हुई जिसका नाम था स्वरभानु। स्वरभानु के मन में देवताओं की तरह पूजे जाने और अमर होने की प्रबल इच्छा थी, इसलिए उसने घोर तपस्या की और देवताओं की तरह पूजे जाने का वरदान तो प्राप्त कर लिया पर असुर होने के कारण अमरता का वरदान नही मिल सका। एक बार जब सुरों और असुरों ने मिलकर समुद्र मंथन किया और जब समुद्र मंथन से अमृत कलश निकला तो सभी सुर और असुर अमृत पान करने के लिए लालायित हो गए और आपस में झगड़ा और वाद-विवाद आरम्भ हो गया, इसी बीच भगवान विष्णु मोहिनी रूप धारण करके सभी को अमृत पिलाने की बात करते हैं, भगवान विष्णु के मोहिनी रूप के आगे सभी मोहित हो गए और उनकी हां में हां मिलाने लगे। मोहिनी रूपी भगवान विष्णु ने देवताओं को पहले अमृत पिलाना शुरू कर दिया, स्वरभानु जो इस अमर होने के अवसर का बड़ी बैचेनी से इंतजार कर रहा था और देवताओं को अमृत पान करते हुए देख रहा था, थोड़ी ही देर में वह समझ गया कि अमृत केवल सुरों को ही पिलाया जाएगा, असुरों को नही, इसलिए स्वरभानु देवता (सुर) के वेश में सूर्य और चन्द्रमा के बीच जाकर बैठ गया, जिसका किसी को पता नही चला और जैसे ही स्वरभानु ने अमृत पिया, उसी समय सूर्य और चन्द्रमा ने स्वरभानु को पहचान लिया और मोहिनी रूपी श्री हरी विष्णु भगवान को बता दिया। भगवान विष्णु ने उसी समय स्वरभानु की गर्दन पर सुदर्शन चक्र से प्रहार किया और सिर धड़ से अलग कर दिया, अमृत तत्व पान करने के बाद स्वरभानु की मृत्यु नही हुई बल्कि एक से दो हो गए, इस तरह स्वरभानु का सिर राहु के नाम से प्रसिद्ध हुआ और स्वरभानु का धड़ केतु के नाम से। सूर्य और चन्द्रमा का इस प्रकार से मोहिनी रूप धारी श्री हरि विष्णु को शिकायत करना बहुत भारी पड़ा क्योंकि अमृत पान के कारण स्वरभानु राहु और केतु के रूप में सदा के लिए अमर हो गया और ब्रह्मा जी ने दोनों को नव ग्रहों में स्थान भी दे दिया। तभी से राहु और केतु, सूर्यदेव और चन्द्रदेव से द्वेष रखतें हैं और इसी

बदले की भावना से राहु और केतु अमावश्या के दिन सूर्य पर और पूर्णिमा के दिन चन्द्रमा पर ग्रहण बनकर उनको पीड़ित करतें हैं।

राहु ग्रह की पौराणिक कथा का ज्योतिषीय संबंध

असुरी बुद्धि के साथ महत्वकांक्षी, बहुत ऊंची सोच और सफलता पाने के लिए किसी भी हद तक जाने का साहस करना चाहे तपस्या का मार्ग हो या छल का, साथ ही द्वेषभाव से बदला लेने की भावना राहु में कूट-कूट कर भरी होती है।

राहु अशुभ ग्रहों में गिना जाता है। इसको छाया ग्रह भी कहते हैं, क्योंकि यह सूर्य और चन्द्रमा के मार्गों के आपस में टकराने से बनता है। यह हमेशा ही केतु से 180° की दूरी पर होता है। यह लगभग एक दिन में 3 मिनट चलता है, और लगभग 18 महीनों तक एक राशि में रहता है। कुंडली में भय और डर को दर्शाता है। राहु काल को अशुभ माना जाता है। राहु को एक पापी ग्रह की श्रेणी में रखा गया है, जो जातक को अनेकों प्रकार के कष्ट, परेशानी आदि से घेरे रखता है, जीवन में अचानक घटनाओं का घटित होना (अच्छी या बुरी दोनों ही), राहु के राशि बदलने या दशाओं के बदलने के कारण होता है, कुछ विशेष अवस्थाओं को छोड़कर राहु क्लेशकारी और परेशान करने वाला ही होता है। यदि यह कष्ट दे रहा हो तो इसकी शांति आवश्यक है।

राहु ग्रह के कुछ अन्य ज्योतिषीय संबंध निम्न प्रकार के हैं:-

1	कारक	दुःख
2	संबंध	शत्रु
3	स्वभाव	क्रूर और पापी
4	गोत्र	पैठीनस
5	दिन	शनिवार

6	वाहन	शेर
7	रंग	नीला/कृष्ण/धूम्र
8	दिशा	पश्चिम दक्षिण (South-West)
9	गुण (प्रकृति)	तमोगुणी
10	लिंग	स्त्री/पुरूष
11	वर्ण (जाति)	निम्न वर्ग, शूद्र
12	तत्व	वायु/छाया
13	स्वाद	कटु (कड़वा)
14	धातु	लोहा/सीसा/मिट्टी के बर्तन
15	ऋतु	सभी मौसम
16	दृष्टि विशेष	5,7,9 (पूर्ण दृष्टि)
17	भोजन	उड़द
18	शारीरिक अंग	हड्डियां
19	अन्न दान	सप्त धान्य
20	द्रव्य दान	तेल
21	विंशोत्तरी महादशा	18 वर्ष
22	जप संख्या	18,000
23	रत्न	गोमेद, (संस्कृत में तपोमणि)
24	उपरत्न	आंनिक्स/फिरोजा/साफी
25	सहचरी	कराली
26	चरादि	चर
27	समिधा	दूर्वा (दूब)
28	राहु के मित्र ग्रह	शुक्र, शनि
29	राहु के सम ग्रह	बुध, बृहस्पति
30	राहु के शत्रु ग्रह	सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, केतु
31	उच्च राशि	वृष/मिथुन (0° से 20° तक)

32	नीच राशि	वृश्चिक/धनु (0° से 20° तक)
33	मूल त्रिकोण राशि	कुम्भ/ मिथुन (0° से 20° तक)
34	स्वग्रही राशि	कन्या/कुम्भ
35	राशि स्वामी	कन्या/कुम्भ
36	नक्षत्र स्वामी	आर्द्रा, स्वाती, शतभिषा
37	राहु के आधी देवता	सर्प
38	राहु के प्रत्यधि देवता	काल (दुर्गा)
39	राहु ग्रह का कद	दीर्घ (लम्बा)
40	राहु ग्रह शुष्कादि में	शुष्क ग्रह